ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

लोक साहित्य का गढ़वाली काव्य में सांस्कृतिक चेतना

डॉ०मीना

लोक साहित्य लोक और साहित्य दो शब्दों के मेल से बना है साहित्य में वर्णित लोक शब्द के अर्थ को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बहुत ही सटीक शब्दों में व्याख्यायित किया कि लोक का अर्थ नगरों एवं गांव में फैली उस समूची जनता से है जो परिष्कृत रुचि संपन्न तथा सुसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल तथा अकृत्रिम जीवन की अभ्यस्त होती है जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पुस्तक नहीं है अपनी संस्कृति के द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी जीवंत रखने की क्षमता रखती है।

लोक से ही संस्कृति की उपज होती है, वही संस्कृति को आधार प्रदान करता है। लोक और संस्कृति का संबंध आधाराधेय का है। लोक साहित्य का जन्म लोक संस्कृति से होता है।

संस्कृति शब्द स्वयं में बहुत व्यापक है हमारी भारतीय संस्कृति विश्व की अन्य संस्कृतियों की तुलना में सबसे पुरातन व सनातन संस्कृति जानी जाती है हमारे ऋषि-मुनियों ने जिन सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा की थी उनका महत्व सर्वविदित है वह मूल्य न तो कभी पुराने होते हैं और ना ही लुप्त होते हैं। वह मूल्य आज भी उतने ही उपयोगी हैं। इन्हीं मूल्यों की अभिव्यक्ति हमारे साहित्यकारों ने अपनी साहित्य के माध्यम से संस्कृत चेतना जगाए रखने के कारण की है इसमें अतीत का गौरवगान प्रमुखता से अभिव्यक्ति है। क्योंकि किसी भी देश की संस्कृति चेतना उसके अतीत की संचित निधि होती है।

आज तक संस्कृति की कोई निश्चित परिभाषा नहीं बनी है फिर भी हो मानना पड़ेगा कि संस्कृति एक ऐसी वस्तु है जो हमारे जीवन में बर्सो से ही प्राप्त है। संस्कृति के तात्पर्य मनुष्य की वे निरूपयोगी क्रियाएं हैं जो मानव व्यक्तित्व को परिष्कृत एवं समृद्ध बनाती हैं।

भारतीय मान्यता के अनुसार-जीवन का हर पक्ष संस्कृति के अंतर्गत समाहित किया जाता है किसी काल विशेष में जीवन के विविध पक्ष भी उस काल की संस्कृति के संघटन तत्व होते हैं। किसी भी देश की संस्कृति मूलतः उसके निवासियों की चेतना की क्रिया है न कि विश्वासों और आदेशों की जड़ धरोहर है। वह चेतना क्रिया अतीत को भी जीवंत का चिंतन के रूप में ग्रहण करती है।

साहित्यकार व्यक्ति के रूप में समाज का अंग होने के नाते आज के परिवर्तन में स्वयं को जी कर और उसके स्वरूप अखंड प्रभावों तथा वर्तमान काल के संघर्षों का स्वयं-भोक्ता बनकर साहित्य में उन्हें अभिव्यक्ति दे रहा है, वह आज के मनुष्य और समाज का यह संघर्ष देखकर अनेक कवियों ने रचनाओं में सफलता अभिव्यक्त की है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात का समय वास्तव में पुर्नात्थान का समय था जिसमें मनुष्य और समाज के मुल्लू में परस्पर टकराहट हो रही थी। सहयोग की भावना जो स्वतंत्रता से पूर्व हममें विद्यमान थी जिसके आधार पर संपूर्ण भारत में सामाजिक-सांस्कृतिक सुधार आंदोलन प्रारंभ हुए थे, वह

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

भले अब समाप्त जरूर हो रहे हों, पर इस पुर्नात्या का चित्रण कवि गिरिजा मत कुमार माथुर जी ने इस प्रकार किया है।

यह व्यक्ति और समाज का उतप्त मंथन काल है, संक्रांति की घड़ियां बनी है श्रंखला बंधी हुई है देह।
मन को बांधने बढ़ते पवन के हाथ है।

पाश्चात्य विद्वान बार्नशिला मुलिनाउस्की के अनुसार-संस्कृति एक सामाजिक विरासत है जिसमें परंपरा से पाया हुआ कला- कौशल- वस्तु आदि सामग्री यांत्रिक क्रियाएं, विचार,आदतें और मूल्य समावेशित है।

डॉ.वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार-संस्कृति मनुष्य के भूत वर्तमान और भावी जीवन का महत्वपूर्ण अंग नहीं है मनुष्य जीवन की शैली हमारी संस्कृति है, संस्कृति हवा में नहीं रहती है उसका अपना मूर्तिमान रूप होता है और मनुष्य जीवन की अनेक रूपों का समुदाय संस्कृति है।

प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति होती है जो पारंपारिक रोड से अर्जित परंपरा ज्ञान धर्म सामाजिक चेतना आदि का मिश्रित रूप है। संस्कृति मानव विकास की सर्वोत्तम चेतना की अभिव्यक्ति का साधन है राष्ट्रीय जीवन का संस्कार जिन तत्वों से होता है उसे ही संस्कृति कहते हैं।

डॉ भगवतशरण उपाध्याय के अनुसार-संस्कृति ्का संबंध सामाजिक जीवन से अधिक है जब आदमियों का एक दलिया समाज एक ही रीति से कुछ करता है, एक ही विश्वास रखता है, पूर्वजों के काम को समान रूप से अपने आदर, गौरव की सीख समझता है तो इस तरह संस्कृति का जन्म होता है संस्कृति मानव के सामाजिक जीवन का प्राण है।

संस्कृति समाज के संस्कारों पर आश्रित होती है। संस्कार पारंपरिक विरासत के रूप में मिली हुई अमूल्य अंश है यह रुढ़ि का नहीं मगर सामाजिक चेतना का प्रतीक है, जोश समुदाय का सार्वजनिक रूप से पल्लवन तथा मानव कल्याण में सार्थक सिद्ध होता है। संस्कृति का मूल समाज क्रियाकलापों पर आश्रित होता है इसमें मानव जीवन की अच्छाई वह बुराई छुपी होती है संस्कृति मानव की सामाजिक विरासत है। व्यक्ति के लिए समाज का सबसे बड़ा उपहार संस्कृति है संस्कृति प्रकृति की देन नहीं बल्कि समाज की ही देन है। संस्कृति मानव समाज को व्यवस्थित और सांस्कृतिक रूप प्रदान करती है। समाज की स्थिति को संस्कृति उजागर करने में पूर्ण सहयोग प्रदान करती है। संस्कृति मानव जीवन का अत्यंत संवेदनशील पहलू है।

डॉ० चातक के अनुसार-गढ़वाली लोक संस्कृति यदि कहीं स्पंदित होती है तो यहां के लोकगीतों में, लोककथाओं, लोक नृत्यों,पवाड़ो में लोकोक्तियों में, मुहावरों में ही होती है, जिससे उन्हें लोक साहित्य के अंतर्गत रख दिया है। संस्कृति का निमायक तत्त्व गढ़वाल का भूगोल भी है। गढ़वाल हिमालय गंगा- यमुना का पवित्र उद्गम स्थल है इस दृष्टि से देखा जाए तो गढ़वाल की संस्कृति संपूर्ण भारत की संस्कृति को

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

प्रभावित करती है, क्योंकि भारतवर्ष की संस्कृति के दो महत्वपूर्ण घटक है-गंगा- यमुना और हिमालय। ये दोनों उत्तराखंड की पावन धरती में ही स्थित है।

उत्तराखंड की संस्कृति के अंतर्गत धर्म-दर्शन और विश्वास का भी महत्वपूर्ण पहलू सामने आता है इसके साथ साथ परंपराएं, मान्यताएं एवं रीति रिवाज भी है।

विश्व भर में कहीं हिंदू धर्म की आस्था के केंद्र बद्रीनाथ, केदारनाथ पवित्र धर्म भी यही है मां जीवनदायिनी गंगा यमुना की नहर भी इसी क्षेत्र में है जो पांच प्रयागों का स्थान तीर्थ नगरियों के रूप में हरिद्वार, ऋषिकेश भी इसी पावन भूमि में स्थित है।

शिवजी का प्रिय निवास स्थान हिमालय ही माना गया है, जहां केदारनाथ के अतिरिक्त मद्ध्यमेश्वर, रुद्रनाथ, तुंगनाथ, कल्पेश्वर पांच केदार मैं विभाजित किए गए हैं। गढ़वाल में जनश्रुति के अनुसार माना गया है कि (श्रीनगर)कमलेश्वर मैं राम के द्वारा सहस्त्र कमल उसे शिव की आराधना की गई थी। शिव भगवान से संपूर्ण जन जीवन जुड़ा है। प्रत्येक क्षेत्रों, गांवों आदि में शिवालय की संख्या अधिक है। शिव शंकर अपने रौद्र रूप में भैरवनाथ के रूप में, बाल भैरव, काल भैरव, बटुक भैरव के रूप में पूजे जाते हैं, इनमें प्रतीक रूप से त्रिशूल की पूजा की जाती है। उत्तराखंड में नंदा जात का खास महत्व है देवी धारी मां, कालीमठ की माता, मां ज्वाला देवी, चंद्रबदनी, सुरकंडा, उमा देवी, नंदा आदि रूपों में शक्ति की पूजा होती है। गढ़वाल में इन देवियों को भगवती पुकारा जाता है। पहाड़ की नारी मां की शक्ति से अधिक प्रभावशाली दिखाई देती है। पूजा अनुष्ठानों में पर्याय स्त्रियों पर देवी का प्रकटीकरण होता है। कुछ शांत स्वभाव से तथा कुछ विकराल रूप से होता है ब्राह्मण मंगल कार्यों या दुख के क्षणों में अपना कार्य करते हैं वही हरिजन भी इन कार्यों में शामिल होना अनिवार्य समझते हैं वह अपना कर्तव्य ढोल, मसकबाजा, दमो,नौबत आदि द्वारा करते हैं। संस्कृति की कुछ परंपराओं का निर्धारण भी उनके द्वारा होते हैं। गढ़वाल की संस्कृति की नियामक तत्वों में यहां के लोकगीतों की भी अहम भूमिका है।

संस्कृति मानव की सामाजिक विरासत है किसी भी व्यक्ति के लिए समाज का सबसे बड़ा उपहार होता है भारतीय संस्कृति के उपादान में इस पर्वत क्षेत्र, नदी नाले, वन- उपवन, ऋतु, रात- दिन, पशु-पक्षी, वृक्ष और समुद्र आदि प्रकृति के अनेकानेक स्वरूप मुख्य रहे हैं।

गढ़वाल में भारतीय समाज के वे मूल्य पूर्णतः सुरक्षित हैं जो भारतीय संस्कृति को पल्लवित और पुष्पित करने का जहां इस गढ़वाल की धरती को सौभाग्य मिला है वहां इस संस्कृति रूपी उपहार को संजोकर रखने का गौरव भी इस क्षेत्र को प्राप्त है।

गढ़वाल की संस्कृति लोक संस्कृति है किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी संस्कृति व भाषा से होती है। लोक संस्कृति अपने मूल में समयात्मक होती है, कहने का आशय इसका अभिव्यक्ति पक्ष सर्वत्र इसका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

निर्देशन प्रस्तुत करता है। धार्मिक क्षेत्र में बहुदेव प्रतिफलित रूप है। गढ़वाल लोक संस्कृति में उसकी बाल्यभिव्यक्ति आयाम के अंतर्गत आ जाती है।

संस्कृति साहित्य एवं कला के क्षेत्र में गढ़वाल की अपनी अलग से पहचान रही है। इस क्षेत्र में प्राचीन काल से ही यहां अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं इन विभिन्न क्षेत्रों की विविध कलात्मक एवं साहित्यिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों की सनातन परंपरा उसी रूप से प्रवाहित हुई है, जैसे यहां गंगा व यमुना सनातन रूप से प्रवाहित होती है। ऋषि-मुनियों तपस्वियों तथा हमारे आदिम साहित्य साधकों के स्तुत्य प्रयास से ही ज्ञान गंगा यहीं से प्रवाहित हुई है और यहां भारत के भू-भागों में उत्तरोत्तर विस्तृत रूप में विभिन्न कवियों के साधनों की आश्रय से ओजस्वी रूप में निःसृत हुई ह

गढ़वाल हिमालय की सुंदर रमणीय धरती की गोद में स्थित है यहां की नदियां,झरने,पर्वत सुंदर संगीत का सृजन करते हैं और यहां का मानव प्रकृतिक के मनोरम वातावरण में झूम झूम कर नाचने लगता है। गढ़वाल का लोक नृत्यमय है। अंतः गढ़वाल भारतीय संस्कृति के सच्चे उद्घोषक यहां के विविध लोक नृत्य है।

हमारे ऋषि-मुनियों ने जिन सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा की थी उनका महत्व सर्वविदित है, वे मूल्य न तो कभी पुरानी होते हैं और नहीं खत्म होते हैं वह मूल्य आज भी उतने ही उपयोगी है जिन्हें मूल्य की अभिव्यक्ति हमारे साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से सांस्कृतिक चेतना जगाए रखने के कारण उसके अतीत का गौरव- गान प्रमुखता से अभिव्यक्त किया है। गढ़वाल हिमालय भारत भूमि का क्षेत्र है जिसको प्रकृति ने अपने अपार वैभव प्रदान किया है यहां तक की बर्फ से ढके पर्वत बुग्याल और फूलों की घाटी तथा करघनी की तरह उन से लिपटी नदियां, अपना अपार सौंदर्य समेटे हैं। उत्तराखंड के देवदार और चीड़ के वन इनमें विचरण करते पशु पक्षी सबका यहां निराला संसार है धार्मिक दृष्टि से यहां तीर्थों, देवी देवताओं की निवास स्थान और ऋषि मुनियों के आश्रम की भूमि रही है यही नहीं, संस्कृति के नये अंकुर इसी भूमि में प्रस्फुटित हुए हैं, यहां की तरह गढ़वाल में भी पीपल के वृक्ष की पूजा माननीय है बाहर देश सुकून सुकून पहाड़ में भी माने जाते हैं मूल नक्षत्र या किसी दूसरी अशुभ घटी हुई पैदा हुए बच्चे को मां बाप छोड़ देते हैं, यात्रा के चलने पर ब्राह्मण के दर्शन अथवा खाली घड़े का सामने आना असगुन समझा जाता है, यदि कोई लड़का या लड़की तथा भरा घड़ा उस वक्त सामने आए तो यात्रा जरूर सफल होनी मानी जाती है। पूस और चैत की महीने काले या अशुभ महीने माने जाते हैं। इन महीनों में बच्चों पर नजर लगने पर विश्वास करते हैं इसलिए बुरी नजर ना लगे,बच्चों को ताबीज बांधते हैं। अच्छे- बुरे स्वप्न पर भी बहुत विश्वास किया जाता है तथा पित्र- पूजा का भी पहाड़ों में बहुत रिवाज है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

संस्कृति का बोध कराने वाले तत्व भी सांस्कृतिक तत्व है संस्कृति शब्द अपने में अति व्यापक है परंतु संक्षेप में संस्कृति वह आयाम है जिसके आधार पर आत्मा,परमात्मा,जीवन- मरण, सुख- दुख,प्रार्थना- भाव और निरभिमानित आधी उलझी हुई गुत्थियों का समाधान प्राप्त होता है।

संस्कृति शब्द विविध अर्थों का द्योतक एवं वाहक है इसका मानव जीवन के विविध क्रियाकलापों उनके सही सामाजिक स्वरूप और मानवता को सही दिशा प्रदान करने वाले तत्वों से घनिष्ठ संबंध है।, संस्कृति देश काल और स्थान का प्रमुख विभेदक स्वरूप है यह मानव चेतना और उसके भाव के स्वरूपों से संबंध होती है जो परिवर्तनशील है। संस्कृति शब्द उसी धातु मूल से निस्पंन हुआ है जिसमें संस्कृति और संस्कार निस्पंन हुए हैं।

संस्कृति के द्वारा सामान्य जनता में प्रचलित आस्था, विश्वास, परंपराएं एवं रीति-रिवाज रिवाज का पता लगता है इस प्रकार मानव समाज के वे सब संस्कार जो लौकिक और पारलौकिक उन्नति के मार्ग को प्रस्तुत करते हुए सर्वांगीण जीवन का निर्माण करते हैं इसमें समाज (गढ़वाल) के चिंतन, मनन, आचार- विचार रहन-सहन, बोली-भाषा, वेशभूषा, कला- कौशल सभी बातें सम्मिलित होती हैं।

संदर्भ ग्रंथ- सूची

1-आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी--लोक साहित्य का अध्ययन।
2-वासुदेव शरण अग्रवाल–कला और संस्कृति।
3-भगवती शरण अग्रवाल–भारतीय संस्कृति की कहानी।
4-डॉ० शिव प्रसाद नैथानी–उत्तराखंड संस्कृतिः साहित्य और पर्यटक।
5-डॉक्टर गोविंद चातक–गढ़वाली लोकगीत एवं सांस्कृतिक का अध्ययन।
6-केशव अनुरागी-गढ़वाल और गढ़वाल।
7-डॉ० गोविंद चातक-गढ़वाली लोकगीत विविधा।
8-डॉक्टर जे०के०गोदियाल-गढ़वाल संस्कृति कला एवं साहित्य।
9-डॉ०कृष्ण देव उपाध्याय-लोक साहित्य की भूमिका।
10-शिवानंद नौटियाल-गढ़वाल के लोक नृत्य गीत।
11-डॉ०सच्चिदानंद राय-हिंदी उपन्यास सांस्कृतिक एवं मानवतावादी चेतना।
12-प्रभुदयाल मीतन-ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास।
13-डॉ० शिवप्रसाद डबराल-उत्तराखंड का इतिहास भाग- 3।
14-डॉ०दिनेशचंद्र बलूनी-उत्तराखंड संस्कृति लोक जीवन इतिहास एवं पुरातत्व।
15-डॉ०कृष्णदेव उपाध्याय-लोक साहित्य की भूमिका।
16-डॉ०वाचस्पति मैठाणी-गढ़वाल हिमालय की देव संस्कृति एक सामाजिक अध्ययन।

डॉ मीनाw/o श्री प्रदीप रावत
निकट मानव उत्थान सेवा समिति
सुभाष नगर शिवाजी वार्ड
गोपेश्वर चमोली गढ़वाल
उत्तराखंड